Scholarly Research Journal for Humanity Science & English Language,
Online ISSN 2348-3083, SJ IMPACT FACTOR 2021: 7.278, www.srjis.com
PEER REVIEWED & REFEREED JOURNAL, JUNE-JULY, 2022, VOL-10/52
https://doi.org/10.21922/srjhsel.v10i52.11541

प्रतिभाशाली छात्र एवं छात्राओं के मूल्यों तथा समायोजन का अध्ययन

श्रद्धा मिश्रा, Ph. D.

प्रचार्य, सरस्वती शिक्षा महाविद्यालय, सुभाश नगर–अम्बिकापुर छत्तीसगढ़

Email: shradhamishra367@gmail.com

Paper Received On: 25 JULY 2022

Peer Reviewed On: 31 JULY 2022

Published On: 1 AUGUST 2022

Abstract

प्रतिभाशीलता शब्द एक विशेषण है, जिसका तात्पर्य है कि एक ऐसा व्यक्ति जो विशेष रूप से असाधारण योग्यता या बुद्धि से सम्पन्न हो। प्रतिभाशाली व्यक्तियों पर अध्ययन लेविस तरमन के सन् 1925 के कार्य से प्रारम्भ हुआ, जिसमें उन्होने उच्च योग्यता वाले व्यक्तियों की पहचान करने के लिए बुद्धि परीक्षण का प्रारूप तैयार किया। मूल्य अच्छे और बुरे व्यवहार में फर्क बतलाता है। यह हमारे व्यक्तित्व की पहचान तय करता है। शिक्षा देश के विद्यार्थियों के व्यवहार, चरित्र निर्माण, आदतों को एक नया रूप एवं आकार देता है। यह रूप विद्यार्थियों के जीवन में एक नयी दिशा प्रदान करता है। यदि मूल्यों का प्रभाव विद्यार्थियों के जीवन में न हो तो विद्यार्थियों का जीवन अंधकारमय तथा दिशा विहिन होने की संभावना है। अतः प्रत्येक नागरिक को भी यह जानकारी होना आवश्यक है। प्रत्येक विद्यार्थी मूल्यों का विकास करे तथा इन मूल्यों की प्राप्ति के लिए ठोस कदम अपनायें। आधुनिक युग में मूल्यों की प्रोन्नति प्रत्येक विद्यार्थी के जीवन में शक्ति प्रदान करता है। यह उनके जीवन में दृढ़ संकल्प का बीज होता है जो अपने लक्ष्य की प्राप्ति के लिए विद्यार्थी अपने जीवन को दाव पर लगा सकता है। विद्यार्थियों के जीवन में मूल्यों की प्राप्ति का मूल्यांकन करना अत्यंत महत्त्वपूर्ण है। चूँकि यह भविष्य का नींद या स्तम्भ है। यह उनके लिए एक जवाबदेही और आने वाली पीढ़ी के लिए एक जवाबदेह नागरिक की भूमिका अदा करता है अतः मूल्य शिक्षा न केवल शब्दों में बल्कि कार्यों में परिलक्षित होता है। अतः मूल्य शिक्षा न केवल सैद्धांतिक दृष्टिकोण से बल्कि प्रायोगिक संदर्भ में भी विराजमान है। इस प्रयोगिक मूल्य शिक्षा को उच्च विद्यालय के विद्यार्थियों को भी दी जानी है क्योंकि ये जो आज सीखते हैं उसे कल अपने जीवन में कार्यान्वित करेंगे। समायोजन का अर्थ होता है समाज में एक दूसरे के साथ मिलकर रहना। अतः समायोजन के ही बुनियाद पर मनुष्य जाति प्रगति करता है। विद्यालय समायोजन का होना अति आवश्यक है। सब प्रकार से समायोजित व्यक्ति वह होता है जो पहले तो अपने आप से ही संतुष्ट और समायोजित हो तथा दूसरे अपने चारों ओर फैले वातावरण या परिवेश से उसका सही तालमेल हो। इस दृष्टि से समायोजन के क्षेत्रों को व्यक्ति तथा उसके वातावरण में ही निहित माना जाना चाहिये। एक व्यक्ति की दुनिया जहॉ उसके अपने शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य तथा व्यक्तित्व के महत्वपूर्ण पहलुओं के इर्द–गिर्द घूमती है वहॉ उसे अपने सामाजिक परिवेश तथा काम–काज के क्षेत्रों में भी समायोजित होने की आवश्यकता पड़ती है। समायोजन संबंधी उसकी इन आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए किसी भी व्यक्ति के समायोजन क्षेत्रों को तीन मुख्य भागों – व्यक्तिगत, सामाजिक तथा व्यवसायिक में बॉटकर समझने का प्रयत्न कर सकते हैं। व्यक्ति अपने आप से कितना समायोजित है इस बात का निर्णय उसके इस क्षेत्र के समायोज स्तर से ही ज्ञान होता है। कोई व्यक्ति किसी क्षेत्र में किस स्तर तक समायोजित है वह इस बात पर निर्भर करता है कि उस क्षेत्र से संबंधित व्यक्ति विशेष की आवश्यकतायें कितनी सीमा तक पूरी होती हैं अथवा उनकी पूरी होने की संभावना व आशा से वह किस सीमा तक संतुष्ट रहता है, जब तक ये आवश्यकताएँ पूरी रहती हैं या इनकी पूर्ति की आशा उसे रहती है व्यक्ति समायोजित रहता है विपरीत अवस्था में वह कुसमायोजन का शिकार हो जाता है। अब प्रश्न यह उठता है कि व्यक्ति को अपने आप से समायोजित रखने या संतुष्ट रखने से संबंधित विभिन्न क्षेत्र कौन–कौन से हैं जिनके उपर उसका व्यक्तिगत समायोजन निर्भर करता है।

मूलशब्द– *दृढ़ संकल्प, अंधकारमय, सैद्धांतिक दृष्टिकोण, कुसमायोजन, कार्यान्वित*

Copyright © 2022, Scholarly Research Journal for Humanity Science & English Language

Scholarly Research Journal's is licensed Based on a work at www.srjis.com

अगर हम आसान भाषा में समझें तो प्रतिभाशाली बालक यानी ऐसे बालक, जो जन्म से ही अपनी प्रखर बुद्धि के कारण अपनी अलग पहचान रखते हैं, अक्सर ऐसा कई बार होता है कि वे अपनी प्रतिभा के बल पर किसी भी कार्य को आसानी से अंजाम देकर सबको आश्चर्य चकित कर देते हैं। इनके अंदर किसी क्षेत्र विशेष के लिए सीखने, समझने और करने की निपुणता अद्वितीय होती है।

प्रतिभाशाली बालकों की विशेषताएँ

प्रतिभाशाली बालक बाल्यकाल से ही अच्छी स्मृति, नएपन के प्रति अभिरूचि, संवेदना के प्रति अतिक्रियाशीलता एवं कम उम्र में ही निपुणतः भाषा के प्रयोग जैसी कई अन्य विशेषताएँ रखते हैंः–

1. उच्चस्तरीय चिंतन, समस्या समाधान तथा निर्णय क्षमता।
2. समस्या का सूझपूर्ण समाधान।
3. उच्च आत्म क्षमता तथा आंतरिक नियंत्रण।
4. नई समस्याओं के प्रति पहले से विद्यमान कौशल का उपयोग करना।
5. किसी क्षेत्र विशेष से ज्यादा प्रतिभा रखना और दूसरे से कम प्रतिभावन रहना।

प्रतिभाशाली छात्रों की समस्याएँ

प्रतिभाशाली छात्रों को अपने शैक्षिक, सामाजिक समायोजन में अन्य बालकों की अपेक्षा अधिक समस्याओं का सामना करना पड़ता है जैसे–

1. विद्यालय में समायोजन की समस्या।
2. सामाजिक समायोजन की समस्या।
3. घरेलू समायोजन की समस्या।
4. कुछ क्षेत्रों में धीमी प्रगति।
5. सामूहिक समायोजन की समस्या।

संबंधित साहित्य का पुनरावलोकन

भारतीय अध्ययनों की समीक्षा (मूल्यों से संबंधित)

डी.एस. (1991) ने दसवीं वर्ग के भौतिक विज्ञान में निहित मानव मूल्यों के बारे में अध्ययन किया। इनके शोध के उद्देश्य यह था कि भौतिक विज्ञान में निहित मूल्यों का प्रतिदिन के जीवन में लागू करने के बारे में पता लगाना, विद्यार्थियों को अपना कर्त्तव्य अपने अंधविश्वास को धर्म, भाषा एवं जाति से संबंधित भेदभाव महसूस करना।

एम. (1991) ने युवावस्था में नैतिक मूल्यों पर आधारित समस्याओं के बारे में अध्ययन किया। उनके अध्ययन के मुख्य उद्देश्य थे कि श्रमिक दल में युवावस्था की नैतिक मूल्यों से संबंधित सामाजिक,

भावात्मक एवं शैक्षिक समस्याएँ हैं, उनका अध्ययन करना, युवावस्था में सैद्धान्तिक सौन्दर्य, धार्मिक, सामाजिक, आर्थिक एवं भेद–भाव मूल्य में क्या भिन्नता है, उनके बारे में अध्ययन करना, युवकों में बेहतर कोटि के मूल्यों को ढूढ़ने के बारे में अध्ययन करना।

राज एम (2001) ने तमिलनाडू राज्य के विश्वविद्यालय में मूल्यों के प्रबंधन के बारे में अध्ययन किया। इनके शोध का मुख्य उद्देश्य, तमिलनाडू के विश्वविद्यालय के अधिकारियों में मूल्यों के प्रबंध के बारे में पता लगाना, तमिलनाडू में अंगीकृत एवं अंगिकृत विश्वविद्यालयों में मूल्यों के प्रबंध में अंतर का पता लगाना, अध्यापक एवं प्रबंधीय कर्मों में मूल्य प्रबंध में अंतर का पता लगाना था।

पंडित (2007) ने विद्यालय शिक्षा द्वारा मूल्य की प्रवृत्ति के बारे में अध्ययन किया उन्होंने निम्नांकित विधि का प्रयोग किया गया। इस अध्ययन में आंकडा इकट्ठा करने के लिए सर्वे विधि को अपनाया गया था। आयोजनाबद्ध तरीके से लड़कियों को कोल्हापुर के एस्थेर पैटेन बालिका उच्च विद्यालय से नमूना लिया गया था। राष्ट्रीय एकीकरण से संबंधित प्रश्नावली इन बालिकाओं को भी दी गई थी। प्रश्न लोकतंत्र की समझ एवं विद्यार्थियों की धरणा के अनुसार बनायी गयी थी। इसमें राष्ट्रीयता, समानता, धर्म, सम्राज्यवाद एवं न्याय की भी भूमिका थी। शोधकर्त्ता ने शिक्षिकाओं एवं शिक्षकों से साक्षात्कार लिया, साक्षात्कार में शोधकर्त्ता ने मूल्यों के प्रवृत्ति के तरीकों पाठयक्रम, मूल्यों का मूल्यांकन, समाज की भूमिका एवं मीडिया से भी संबंधित प्रश्न पूछें। इसमें ये मुख्य तथ्य पाए गए कि मूल्य शिक्षा की प्रवृत्ति के लिए जाने माने व्यक्तियों द्वारा पढ़ाने के लिए प्रबंध करने का सुझाव आया, अध्ययनों को मूल्य शिक्षा के बारे में ठोस रूप से वर्णन करना चाहिए। मूल्य की वृद्धि में विद्यालय, समाज एवं मीडिया की अहम जवाबदेही पायी गयी।

बाबू एवं रेड्डी (2007) ने प्राइमरी अध्यापकों की मूल्य शिक्षा पर आधारित शिक्षा की प्रवृत्ति पर अध्ययन किया। इनके अध्ययन के मुख्य उद्देश्य यह थे कि पुरूष एवं महिला अध्यापकों में मूल्य शिक्षा पर आधारित शिक्षा की प्रवृत्ति में अंतर के बारे में पता लगाना, ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र के अध्यापकों में मूल्य पर आधारित शिक्षा के बारे में पता लगाना, उम्र पर आधारित शिक्षा की प्रवृत्ति में संबंध एवं अंतर के बारे में पता लगाना।

सिंह (2011) ने स्कूल से सम्बन्धित बच्चों की नैतिक निर्णय के विभिन्न सामाजिक–आर्थिक स्थिति और उसकी पृष्ठभूमि पर शोध किया। इनके शोध का उद्देश्य वर्त्तमान में हमारा समाज जाति, पंथ और धर्म के नाम पर बंटा हुआ है। फलस्वरूप आपस में संघर्ष होता रहता है। अतः इस समस्या को कैसे दूर किया जाय, सामाजिक विभिन्नता के कारणों को जानना, बच्चों में नैतिक मूल्यों के प्रति जागृति पैदा करने में स्कूल के शिक्षकों द्वारा किया जा रहा प्रयास था।

रीजिक (2012) ने चेन्नई में सड़क के किनारे रहने वाले बच्चों के बीच सामाजिक और नैतिक मूल्य पर शोध किया इनके शोध का उद्देश्य 'सड़क के बच्चों की सामाजिक और नैतिक मूल्यों पर लिंग के प्रभाव

का आकलन करना, यह निर्धारित करना कि पारिवारिक बच्चों के सापेक्ष सड़क के बच्चों पर सामाजिक और नैतिक मूल्य का कैसा प्रभाव है। ऐसे बच्चों में विद्यालय के प्रति स्थान कैसा है' था।

जैन (2013) ने ''भारतीय शिक्षा प्रणाली में नैतिक मूल्यों में गिरावट'' पर अध्ययन किया इस शोध का उद्देश्य 'शिक्षा प्रणाली में नैतिक मूल्य में क्यों गिरावट आ रही है, पाठ्यक्रम में नैतिक–मूल्य को समुचित स्थान दिया गया है कि नहीं, शिक्षक का नैतिक मूल्यों के प्रति उत्तदायित्व' था। इनके शोध की विधि भारत स्थित 50 जिलों में स्थित 100 विद्यालय का चयन कर न्यायदर्श के रूप में 500 शिक्षकों का चयन के रूप में था।

साहित्य की समीक्षा (समायोजन से संबंधित)

शर्मा (1972) के द्वारा उच्च एवं निम्न उपलब्धि वाले विद्यार्थियों के समायोजन का तुलनात्मक अध्ययन किया गया। उसके अध्ययन से निष्कर्ष प्राप्त हुआ कि निम्न उपलब्धि वाले विद्यार्थियों की अपेक्षा उच्च उपलब्धि वाले विद्यार्थियों का समायोजन उच्च स्तर का है।

सक्सेना (1972) ने उच्च एवं निम्न उपलब्धि वाले विद्यार्थियों की आवश्यकताओं, रूचियों तथा उनकी समायोजन समस्याओं का अध्ययन किया। उसके अध्ययन में पाया गया कि उच्च एवं निम्न उपलब्धि वाले विद्यार्थियों की अध्ययन सम्बन्धी रूचि और उनके समायोजन में सार्थक अन्तर है, तथा उच्च उपलब्धि वाले विद्यार्थियों की तुलना में निम्न उपलब्धि वाले विद्यार्थियों का समायोजन निम्न स्तर का है।

नॉयलर एवं गॉडरी (1972) के द्वारा विद्यार्थियों की बुद्धि तथा समायोजन का उनकी गणित विषय में उपलब्धि के साथ सम्बन्ध का अध्ययन किया गया। उन्होंने अध्ययन में निष्कर्ष प्रस्तुत किया कि विद्यार्थियों की बुद्धि तथा समायोजन का उनकी गणित विषय में उपलब्धि के साथ सार्थक सम्बन्ध है।

लॉरियन एवं साथियों (1977) के द्वारा बालकों की पारिवारिक पृष्ठभूमि तथा उनके विद्यालयी समायोजन का अध्ययन किया गया। उन्होंने अध्ययन में पाया कि जिन परिवारों में बालकों पर शैक्षिक उपलब्धि के लिए अधिक दबाव होता है, उनके बालकों को विद्यालयी समायोजन में अधिक परेशानी तथा समस्याओं का सामना करना पड़ता है।

सक्सेना (1988) ने हाईस्कूल के विद्यार्थियों के समायोजन, उपलब्धि अभिप्रेरणा, उत्तेजना तथा शैक्षिक उपलब्धि पर पारिवारिक सम्बन्धों के प्रभाव का अध्ययन किया। उसने अध्ययन में पाया कि विभिन्न प्रकार के पारिवारिक सम्बन्ध रखने वाले विद्यार्थियों के समायोजन, अभिप्रेरणा तथा शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अन्तर था।

सीरन (2002) ने समन हाई स्कूल के विद्यार्थियों में निष्पत्ति अभिप्रेरणा और विद्यालय निष्पत्ति प्रतियोगिता के बीच संबंध का अध्ययन किया।

Copyright © 2022, Scholarly Research Journal for Humanity Science & English Language

विदेशी अध्ययनों की समीक्षा

सिरेन (1994) ने मूल्यों एवं शैक्षिक लाभः एक युगांडन पूछ–ताछ पर शोध किया। इस अध्ययन के मुख्य उद्देश्य था कि चार स्तर के शैक्षिक लाभ प्राप्तियों में प्रत्येक व्यक्तिगत मूल्यों में अंतर का पता लगाना, विद्यालय के मूल्यों एवं चार स्तर के शैक्षिक मूल्यों की धारणा में अंतर के बारे में पता लगाना, विद्यालय के व्यक्तिगत मूल्यों में असमानता ही शैक्षिक प्राप्ति मूल्य को जोड़ता है का पता लगाना।

एन.जी. (2003) ने मूल्य शिक्षा और शिक्षा में मूल्य शिक्षा में एक दार्शनिक खोज पर अध्ययन किया। इस अध्ययन का मुख्य उद्देश्य था कि मूल्य शिक्षा और शिक्षा में मूल्यः मूल्य शिक्षा में एक दार्शनिक खोज का पता लगाना।

एलेन (2004) ने अपने केस अध्ययन में व्यक्तिगत मूल्य एवं विश्वास पर किया। इस अध्ययन में उन्होंने अपने अध्ययन में नशाखोरों एवं उनके पुनर्निवास पर मूल्यों की भूमिका पर प्रकाश डाला। इस अध्ययन के मुख्य उद्देश्य यह था कि अध्यापकों में मूल्यों एवं विश्वास का असर का पता लगाना, नशाखोरों एवं उनके पुनर्निवास पर किस प्रकार पढ़ता है उसका पता लगाना।

पाल (2011) ने वर्त्तमान समय में निकारागुआ के कैथोलिक माध्यमिक विद्यालय में नैतिक मूल्यों का प्रयोग पर शोध किया। इसका उद्देश्य यह था कि निकारागुआ के माध्यमिक विद्यालयों के बच्चों में धर्म का नैतिक मूल्यों पर पड़ने वाले प्रभाव का पता लगाना, कैथोलिक एवं अन्य विद्यालय में इसका अलग–अलग प्रभाव देखना, नैतिक मूल्य और अध्ययन के बीच संबंध स्थापित करना था।

सी ली (2012) ने हांगकांग में प्राथमिक विद्यालय के शिक्षकों के बीच नैतिक मूल्य और नागरिक शिक्षा का एक अवलोकन। इस शोध का यह उद्देश्य था कि हांग–कांग के प्राथमिक विद्यालय में नैतिक और नागरिक शिक्षा के पाठयक्रम में सुधार, इस कार्य हेतु सरकार द्वारा वित्त का व्यवस्था करना, इसके प्रति शिक्षक का उत्तरदायित्त्व।

समायोजन

समायोजन का अर्थ होता है समाज में एक दूसरे के साथ मिलकर रहना। अतः समायोजन के ही बुनियाद पर मनुष्य जाति प्रगति करता है। विद्यालय समायोजन का होना अति आवश्यक है।

समायोजन से संबंधित परिभाषाएँ

1. गेटस, जेरसिल्ड एवं अन्य ''समायोजन एक ऐसी सतत प्रक्रिया है जिसके द्वारा एक व्यक्ति अपने व्यवहार में इस प्रकार से परिवर्तन करता है कि उसे स्वयं तथा अपने वातावरण के बीच और अधिक मधुर संबंध स्थापित करने में मदद मिल सके।'' (गेटस, 1970, प.सं.–614)
2. एल0एस0शेफर – ''समायोजन वह प्रक्रिया है जिसके द्वारा कोई जीवधारी अपनी आवश्यकताओं तथा इन आवश्यकताओं की संतुष्टि से संबंधित परिस्थितियों में संतुलन बनाये रखता है।'' (बोरिंग, लार्जल्डि एण्ड वेल्ड, 1961, प.सं.–511)

Copyright © 2022, Scholarly Research Journal for Humanity Science & English Language

3. वोनहेलर – ''हम समायोजन शब्द को अपने आपको मनोवैज्ञानिक रूप से जीवित रखने के लिए वैसे ही प्रयोग में ला सकते है जैसे कि जीवशास्त्री अनुकूलन शब्द का प्रयोग किसी जीव को शारीरिक या भौतिक दृष्टि से जीवित रखने के लिए प्रेरित करते हैं।''

समायोजन के क्षेत्र एवं प्रकार

सब प्रकार से समायोजित व्यक्ति वह होता है जो पहले तो अपने आप से ही संतुष्ट और समायोजित हो तथा दूसरे अपने चारों ओर फैले वातावरण या परिवेश से उसका सही तालमेल हो। इस दृष्टि से समायोजन के क्षेत्रों को व्यक्ति तथा उसके वातावरण में ही निहित माना जाना चाहिये। एक व्यक्ति की दुनिया जहॉ उसके अपने शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य तथा व्यक्तित्व के महत्वपूर्ण पहलुओं के इर्द–गिर्द घूमती है वहॉ उसे अपने सामाजिक परिवेश तथा काम–काज के क्षेत्रों में भी समायोजित होने की आवश्यकता पड़ती है। समायोजन संबंधी उसकी इन आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए किसी भी व्यक्ति के समायोजन क्षेत्रों को तीन मुख्य भागों – व्यक्तिगत, सामाजिक तथा व्यावसायिक में बॉटकर समझने का प्रयत्न कर सकते हैं।

- व्यक्तिगत समायोजन
- शारीरिक विकास और स्वास्थ्य संबंधी समायोजन
- मानसिक विकास और समायोजन
- संवेगात्मक समायोजन

व्यक्तिगत आवश्यकताओं से संबंधित समायोजन

हमारे व्यक्तिगत समायोजन की परिधि में ऐसा समायोजन भी शामिल होता है जिनका संबंध हमारी व्यक्तिगत आवश्यकताओं की पूर्ति से होता है। इन आवश्यकताओं में शारीरिक आवश्यकताओं के रूप में भूख, प्यास, नींद, विश्राम आदि आवश्यकताएँ आती है। भौतिक आवश्यकताओं में भौतिक सुख–सुविधाओं को जुटाने तथा भोगने की बात आती है। सामाजिक एवं मनोवैज्ञानिक आवश्यकताओं में स्नेह व प्यार पाने और देने, आत्म अभिव्यक्ति करने, दूसरों पर प्रभुत्व जमाने, आदर एवं सम्मान प्राप्त करने जैसी आवश्यकताएँ आती हैं। इन सभी प्रकार की व्यक्तिगत आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु विकास में अपना–अपना अद्वितीय योगदान होता है। शिक्षा का कार्य व्यक्ति को वातावरण के साथ उस सीमा तक अनुकूलन कराना है, जिससे व्यक्ति तथा समाज दोनों के लिये स्थायी संतोष प्राप्त हो सके।

अगर हम आसान भाषा में समझें तो प्रतिभाशाली छात्र यानी ऐसे बालक, जो जन्म से ही अपनी प्रखर बुद्धि के कारण अपनी अलग पहचान रखते हैं, अक्सर ऐसा कई बार होता है कि वे अपनी प्रतिभा के बल पर किसी भी कार्य को आसानी से अंजाम देकर सबको आश्चर्य चकित कर देते हैं। इनके अंदर किसी क्षेत्र विशेष के लिए सीखने, समझने और करने की निपुणता अद्वितीय होती है।

Copyright © 2022, Scholarly Research Journal for Humanity Science & English Language

संदर्भसूची

अग्रवाल–जे.सी., (1994), विकासशील भारत में शिक्षा, आर्य बुक डिपो, नई दिल्ली।

कौल, एल, (2010), शैक्षिक अनुसंधान की कार्य प्रणाली, विकास पब्लिसिंग हाऊस प्रा0 लि0 नोएडा (यू.पी.)।

कौल, लोकेश (2009), शैक्षिक अनुसंधान की कार्य प्रणाली, विकास पब्लिशिंग हाऊस प्राईवेट लिमिटेड, नोएडा, यू.पी.।

चाँद, विजया शेरी, अमीन चौधरी एण्ड गीता (2006), शिक्षा संगमः इनोवेशन्स अंडर द माध्यमिक शिक्षा, नयी दिल्ली।

मंगल, एस.के. (2011), शिक्षा मनोविज्ञान, पी.एच.आई. प्राईवेट लिमिटेड, नई दिल्ली।

वालिया, जे.एस., (1998), शिक्षा के सिद्धान्त तथा विधियाँ, अहम् पाल पब्लिशर्स, पंजाब ।

सुलेमान, मुहम्मद (2002), उच्चतर शिक्षा मनोविज्ञान, मोती लाल बनारसीदास, जवाहर नगर, नई दिल्ली।

सिंह, अरूण कुमार (2009), मनोविज्ञान, समाजशास्त्र तथा शिक्षा में शोध विधियॉ, मोतीलाल बनारसीदास, दिल्ली।

जनरल

कपूर, (1991), क्लासिकल भैल्यू एण्ड चाइल्ड लिटरेचर एण्ड एजुकेशन, भारतीय आधुनिक शिक्षा, 9(3), 41–45

गुप्ता, के, एम (1991), भैल्यू इन एजुकेशन, भारतीय आधुनिक शिक्षा, 8(4), 21–24

मिश्रा, एस. (1996), आइडियाज ऑफ डिफरेन्स कम्यूनिटीज टूआडर्स मोरल एजुकेशन एण्ड सरकुरेलिज्म, भारतीय आधुनिक शिक्षा 26(7) 40–45

Copyright © 2022, Scholarly Research Journal for Humanity Science & English Language